Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - 1 (Hons)
Paper - I
Indian Philosophy

1 "Sankhya: Bondage and libration"
(सांख्य: बन्धन एवं मुक्ति)

भारतीय दर्शन के अन्य सम्प्रदायों की तरह सांख्य दर्शन भी मोक्ष को सर्वोच्च पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार करता है लेकिन यहाँ मोक्ष को सिर्फ Phenomenal माना गया है क्योंकि पुरुष अपने वास्तविक स्वरूप में हमेशा मुक्त ही रहता है। कहा गया है "The salvation in Sankhya-Philosophy is only phenomenal because the tru self is always free." अविवेक के कारण पुरुष का प्रकृति के साथ संयोग होता है फलस्वरूप प्रकृति की विकृतियों को पुरुष अपना गुणमान लेता है। यही अविवेक बन्धन का मूल कारण है जब पुरुष को विवेकज्ञान प्राप्त हो जाता है कि वह प्रकृति तथा इसकी विकृतियों सर्वथा पृथक है अर्थात जब वह अपने वास्तविक स्वरूप को सर्वथा पहचान लेता है तो वह पुनः मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

इसप्रकार यह तुल्य है कि पुरुष का बन्धन और मोक्ष सिर्फ प्रतीत्यात्मक (Phenomenal) है वास्तविक रूप से न तो वह

बन्धन ग्रस्त होता है और न कभी मोक्ष को प्राप्त करता है, पुरुष एक शुद्ध चेतन सत्ता है जो सभी प्रकार के गुण तथा कर्म से रहित होता है। यह अपने वास्तविक स्वरूप में शरीर, इन्द्रिय, मन इत्यादि सभी से पृथक है लेकिन अविवेक के कारण जब वह अपने को इनके साथ सम्बन्धित कर देता है तो सभी प्रकार के दुःखों का अनुभव करना है वस्तुतः सुख-दुःख, पाप-पुण्य इत्यादि का अनुभव करनेवाला मन है, आत्मा नहीं "It is the mind, and not the self that feels pleasure an pain and is happy or unhappy. So also virtue and vice, merit and demerit in short, all moral properties belong to the ego who is the striver or doer of all acts."

अनुसार अहंकार सांख्य दर्शन के विकृति है, बन्धनग्रस्त होता है और अहंकार ही मोक्ष प्राप्त करता है। पुरुष प्रकृति से पृथक सत्ता के रूप में वास्तविक रूप से बन्धनग्रस्त और मुक्त नहीं होता है अपार यह वास्तविक रूप से बन्धनग्रस्त

होता तो कभी भी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता था क्योंकि जो वास्तविक है वह कभी विनिष्ट नहीं हो सकता है। प्रकृति ही अपनी विकृतियों के माध्यम से बन्धनग्रस्त होती है और प्रकृति ही मोक्ष प्राप्त करती है यही कारण है कि ईश्वरकृष्ण ने लिखा है—

" Of a coutainty, therefore, not any spirit is bound or liberated nor does it migrate, it is the Primal Nature, abiding in main told torms, that is bound, is liberated and migrates."

तस्मान्न बध्यतेद्धा न मुच्यते नऽपि संसरति कश्चित्।
संसरति बध्यते मुच्यते च नानाश्रया प्रकृतिः।।

यह स्पष्ट है कि उपर्युक्त कथन से प्रकृति ही अपनी विकृतियों के साथ बन्धनग्रस्त हो जाती है, जब पुरुष प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जान लेता है तो प्रकृति इतनी शर्मीली है कि पुनः वह पुरुष के समक्ष उपस्थित नहीं होती। ईश्वरकृष्ण के अनुसार

" It is my belief that there is not any other being more bashful than Primal Nature, who because of the realisation 'I have been seen' never again

comes into the views of the spirit.

प्रकृते: सुकुमारतरं न किञ्चिदस्तीति मे मतिर्भवति। या दृष्टास्मीति पुनर्न दर्शनमुपैति पुरुषस्य॥

जिस प्रकार दर्शकों के संतुष्ट हो जाने से एक नर्तकी नृत्य करना बन्द कर देती है उसी प्रकार पुरुष को मोक्ष प्राप्त हो जाने से प्रकृति विकास करना बन्द कर देती है।

"रङ्गस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृत्यात्। पुरुषस्य तथात्मानं प्रकाश्य विनिवर्तते प्रकृतिः।"

सांख्य दर्शन के अनुसार बन्धन की अवस्था में पुरुष तीन प्रकार के दुःखों का अनुभव करता है जिन्हें क्रमशः आध्यात्मिक आधिभौतिक तथा आधिदैविक दुःख कहा जाता है, शारीरिक तथा मानसिक दुःख जैसे बिमारी, सिरदर्द, भय, क्रोध, चिन्ता इत्यादि को 'आध्यात्मिक दुःख' के अन्तर्गत रखा जा सकता है। बाह्य प्राकृतिक कारणों से प्राप्त कष्ट जैसे हत्या, सर्पदंश, कीट का चुभना इत्यादि आधिभौतिक दुःख कहलाता है अति प्राकृतिक शक्तियों जैसे भूत, प्रेत इत्यादि से प्राप्त कष्ट को आधिदैविक दुःख कहा जाता है।

जब पुरुष अपने वास्तविक स्वरूप को जान लेता है और प्रकृति तथा उसकी विकृतियों से अपनी पूर्ण पृथकता का अनुभव करने लगता है तो वह उपर्युक्त तीन प्रकार के दुःखों से छुटकारा प्राप्त

कर लेता है। इसप्रकार मोक्ष का अर्थ है वह अवस्था जिसमें पुरुष तीन प्रकार के दुःखों से पूर्णतः छुटकारा प्राप्त कर लेता है "Liberation is a positive state of the complete cessation of all kinds of suffering." कर्म के द्वारा इस अवस्था की प्राप्ति संभव नहीं है क्योंकि सभी प्रकार के शुभ या अशुभ कर्म बन्धन की ओर ले जाते हैं, ज्ञान के द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति संभव है,

(ज्ञानेन चापवर्गो विपर्ययादिष्यते बन्धः)

पुरुष को यह ज्ञान प्राप्त करना होगा कि वह प्रकृति से पूर्णतः अलग है। तत्वाभ्यास के द्वारा ही विवेकज्ञान की प्राप्ति होती है। ईश्वर कृष्ण ने कहा है — "Thus from the repeated study of truth, there results that wisdom, I do not exist nothing is mine, I am not which leaves no residence to be known is pure being, free from ignorance, is absolute.

एवं तत्वाभ्यासान्नास्मि न मे नाहमित्यपरिशेषम् अविपर्ययाद्विशुद्ध-

केवलम उत्पद्यते ज्ञानम ।

सांख्य दर्शन दो प्रकार के मोक्ष को स्वीकार करता है - जीवन - मुक्ति तथा विदेह मुक्ति जब पुरुष अपने जीवनकाल में ही अपने वास्तविक स्वरूप को जान लेता है तो वह जीवनमुक्त कहलाता है। शरीर के नष्ट हो जाने पर मरणोपरान्त प्राप्त मोक्ष को विदेह-मुक्ति की संज्ञा दी जाती है। जीवन मुक्ति में प्रारब्ध कर्म के कारण शरीर कायम रहता है लेकिन विदेह मुक्ति में शरीर भी नष्ट हो जाता है और सभी प्रकार के दु:खों से छुटकारा प्राप्त कर लिया जाता है। विज्ञानभिक्षु जीवन मुक्ति की धारणा को स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि इनके अनुसार जबतक शरीर कायम रहता है तबतक हम दु:खों से पूर्ण छुटकारा नहीं प्राप्त कर सकते हैं ।

लेकिन सांख्य दर्शन के मोक्ष सम्बन्धी विचार की तीव्र आलोचना की गई है । अगर बन्धन का मूल कारण पुरुष और प्रकृति का संयोग है तो पुरुष-

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

शाश्वत रूप से बन्धन ग्रस्त रहेगा। क्योंकि प्रकृति शाश्वत है अतः पुरुष से इसका सम्बन्ध भी शाश्वत ही होगा। ऐसी स्थिति में पुरुष और प्रकृति का वियोग सम्भव नहीं है और जबतक दोनों का वियोग नहीं होगा मोक्ष की प्राप्ति सम्भव नहीं है।

सांख्य दर्शन के मोक्ष सम्बन्धी विचार का सबसे बड़ा दोष है इसका निषेधात्मक होना। मोक्ष सभी प्रकार के दुःखों के विनाश की अवस्था है यह शाश्वत आनन्द की अवस्था नहीं है। लेकिन वह अवस्था जो सिर्फ निषेधात्मक है भावात्मक नहीं है। कभी भी हमारा सर्वोच्च आदर्श नहीं हो सकता है "If it is a neutral colourless state having neither pain or plesoure, will anybody aspire for sinch a stone-like existence?"

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सांख्य दर्शन बन्धन और मोक्ष को पुरुष के लिए सिर्फ प्रतीत्यात्मक मानता है। पुरुष और प्रकृति का संयोग बन्धन है और दोनों का वियोग मोक्ष। बन्धन का कारण अविवेक है और मोक्ष का कारण विवेक। मोक्ष की अवस्था सभी प्रकार के दुःखों के अन्त हो जाने की अवस्था है, यह शाश्वत आनन्द की अवस्था नहीं है।